एती अगनी तें क्योंकर सही, अनेक विध तोको धनिऐं कही।
निपट जीव तूं हुआ निठोर, झूठी प्रीत न सक्या तोर।। ३३ ।।

हे जीव ! तू इतना जुल्म कैसे सहन कर गया? तुझे तो धनी ने इतना समझाया था। हे जीव ! तू निश्चय ही कठोर हो गया है (काला पत्थर हो गया है)। तू इस तन से झूठी प्रीति नहीं तोड़ सका?

ऐसा अबूझ अकरमी हुआ इन बेर, कछू न विचारया न छोड़ी अंधेर।
ऐसी आपसे ना करे कोए, खोया अपना परवस होए।। ३४ ।।

तू इस समय ऐसा नासमझ बदनसीब हो गया कि तूने कुछ नहीं सोचा और शरीर में पड़ा रहा (शरीर छोड़ा नहीं)। अपने आप से ऐसा कोई नहीं करता कि दूसरे के वश में होकर अपनी न्यामत खो दे।

ऐसा होए खांगडू जुदा पड़्या, एती अगनिऐं अजू न चुड़या।
पांच बरस का होए जो बाल, सो भी कछुक करे संभाल।। ३५ ।।

तू ऐसा खागडू (न गलने वाली मूंग का दाना) निकला कि इतना कहर बरसा फिर भी तू गला नहीं। पांच वर्ष का बालक भी अपने को सम्भाल कर रखता है।

धनिऐं तोको बोहोतक कह्या, गए अवसर पीछे कछू ना रह्या।
तेरी दोरी क्यों न टूटी तिन ताल, फिट फिट रे भूंडा कहां था काल।। ३६ ।।

धनी ने तुझे बहुत कुछ कहा, परन्तु अवसर हाथ से निकल गया। अब पछताने से क्या होगा? हे पापी काल ! तू उस समय कहां था? तेरा बन्धन उस समय क्यों नहीं टूटा?

ए तो केहेर बड़ा हुआ जुलम, जान्या विरह क्यों सहे खसम।
सो मैं अपनी नजरों देख्या, धरम हमारा कछू न रह्या।। ३७ ।।

यह तो बड़ा भारी जुल्म हुआ है। न जाने अपने खाविन्द का विरह कैसे सहन हुआ? मैंने यह सब कुछ देखा तो पता चला कि हम बेईमान हो गए।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ८८ ।।

विलाप–राग रामश्री

ओहि ओहि करती फिरों, और करों हाए हाए रे।
पिउजी बिछोहा क्यों सहूं, जीवरा टूक टूक होए न जाए रे।। १ ।।

मैं ओही-ओही और हाय-हाय करती फिरती हूं, मेरे प्रीतम चले गए। वियोग कैसे सहन करूं? यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

फिट फिट रे भूंडा तूं सब्द, क्यों आई मुख बान रे।
वाओ ना लगी तिन दिसकी, निकस ना गए क्यों प्रान रे।। २ ।।

धिक्कार है पापी शब्द तुझे, मुख से तूने यह कैसे कहा कि धनी चले गए? उनके जाने की खबर तुझे नहीं मिली? हे प्राण! तुम निकल क्यों नहीं गए।

Nijanand App

तूं रे जुबां ऐसी क्यों वली, कहेते एह वचन रे।
खैंच निकालूं तोको मूल थें, जहां से तूं उतपन रे।। ३ ।।

हे जबान ! तूने ऐसे वचन कैसे कह दिए? (कि धनी 'धाम' चले गए हैं) दिल करता है जहां से तू निकली है वहीं से तुझे खींच निकालूं।

ए रे पिउजी सिधावते, वाचा क्यों रही तूं अंग।
उजड़ ना पड़े दंतड़े, घन घाय मुख भंग रे।। ४ ।।

पिउजी के जाते समय, हे मेरी आवाज ! तू अंग में कैसे रही? मुंह पर इतनी हथौड़े की चोटें पड़ीं फिर भी तुम दांत! टूट कर नीचे क्यों नहीं गिरे?

तें क्या सुने नहीं श्रवना, प्यारे पिउ के वचन रे।
ए रे लवा तुझे सुनते, क्यों ना लगी कानों अगिन रे।। ५ ।।

हे कानो ! तुमने पिया की मीठी वाणी क्या नहीं सुनी थी? ऐसी बुरी खबर सुनते ही तुम्हें आग क्यों नहीं लग गई?

चलना पिउ का सुनते, तोहे सब अंगों अगिन ना आई।
सुनते आग झाला मिने, दौड़ के क्यों न झंपाई।। ६ ।।

पियाजी का चलना सुनकर मेरे शरीर में आग क्यों नहीं लग गई? सुनते ही आग की लपटों में दौड़कर क्यों नहीं कूद गया?

नीच नैंन ए तुझ देखते, आया न आंखों लोहू।
पिउ लौकिक जिनों बिछुरे, ऐसे भी रोवे सोऊ।। ७ ।।

हे नीच आंखो ! तुम्हारे देखते हुए यह न्यामत (धनी) चली गई। तुमने खून के आंसू क्यों नहीं बहाए? संसारी लोगों के भी खाविंद मरते हैं तो वह भी रोते हैं।

रोवे लोहू आंखों आंझू चले, सो कहा भयो रोवनहारे।
देखत ही पिउ चलना, निकस न पड़े तारे रे।। ८ ।।

हे आंखो ! खाली रोने से क्या होगा? तुमसे तो खून की धारा बहनी चाहिए थी। धनी का चलना देखकर, पुतलियो ! तुम्हें टूटकर नीचे गिर जाना चाहिए था।

क्यों न आई बास नासिका, पेहेचान के प्रेमल।
पिउ संग जीवरा न चल्या, अंदर लेता था सुगंध सकल।। ९ ।।

हे नासिका ! तुझे पिउजी के चलने की सुगन्ध नहीं आई? पिया के संग हमारा जीव नहीं जा सका जो सारे सुख अन्दर ही अन्दर लेता था।

गुन अंग इन्द्रियों की, पिउ बांधते गोली प्रेम काम।
पेहेचान करते पोहोंचावने, सनमंध देख धनी धाम।। १० ।।

धाम का सम्बन्धी जानकर धाम पहुंचने के लिए हमारे गुण, अंग, इन्द्रियों को प्रेम के बन्धन में बांधते थे।

Nijanand App

गुन अंग इन्द्री आकार के, आग पड़ो तुम पर रे।
प्रेम न उपज्या तुमको, चलते धामधनी घर रे।। ११ ।।

मेरे शरीर के सब गुण, अंग, इन्द्रियो ! तुम्हें आग लग जाए। धाम-धनी के घर चलते समय तुम्हें प्रेम नहीं आया।

एती जोगवाई ले तूं आकार, धनी चलते पीछे क्यों रह्या रे।
अब जलो रे उड़ो खाखड़े, इन समें गल पिघल न गया रे।। १२ ।।

हे मेरे शरीर ! तू इतना सामान (शक्ति) लेकर धनी के चलते समय पीछे क्यों रह गया? अब सूखे पत्ते के समान जलो, उड़ते फिरो। उस समय तू गलकर पिघल क्यों नहीं गया?

अंग तोहे विरह अगिन की, न लगी कलेजे झाल रे।
ए विरहा ले अंग खड़ा रह्या, फिट फिट करम चंडाल रे।। १३ ।।

हे कलेजे ! तेरे अन्दर विरह की अग्नि की ज्वाला नहीं जली। हे चाण्डाल शरीर ! तुझे धिक्कार है जो इतना विरह लेकर भी खड़ा है।

हाथ पांव सब अंग के, सब उजड़ न पड़े संधान।
अंग रोम रोम जुदे न हुए, अस्त होते तेज भान।। १४ ।।

मेरे हाथ, पांव और शरीर के सब जोड़ ! तुम टूट क्यों नहीं गए? अस्त होते सूर्य के समान धनी के जाते समय अंग के रोम-रोम अलग क्यों नहीं हो गए?

ए रे निमूना भान का, मेरे पिउजी को दिया न जाए रे।
ए जोत धनी इन भांत की, कोट ब्रह्मांड में न समाए रे।। १५ ।।

सूर्य के प्रकाश की उपमा मेरे धनी को देना ठीक नहीं। हमारे धनी के ज्ञान की जोत तो करोड़ों ब्रह्माण्डों में नहीं समाती (सूर्य तो केवल एक ब्रह्माण्ड का है)।

ए जोत पकड़ी ना रहे, चली इंड फोड सुन्य निराकार।
सदासिव महाविष्णु निरंजन, सब प्रकृत को कियो निरवार।। १६ ।।

मेरे धनी के ज्ञान की ज्योति चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को फोड़कर शून्य, निराकार, सदाशिव, महाविष्णु और निरंजन, पूरी प्रकृति की हकीकत बताते हुए घर तक जाती है।

सब्दातीत हुते जो ब्रह्मांड, जाए तिनमें करी रोसन रे।
अछर प्रकास करके, जाए पोहोंची धाम के बन रे।। १७ ।।

जागृत बुद्ध के ज्ञान ने जो ब्रह्माण्ड शब्दातीत है, वहां जाकर हमारे धनी के ज्ञान ने प्रकाश किया और अक्षर ब्रह्म का भी ज्ञान देकर परमधाम के वनों में पहुंचा।

सब गिरदवाए बन देखाए के, किए धाम मन्दिर प्रकास।
ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्ट में, प्रगट कियो विलास।। १८ ।।

रंगमहल के चारों तरफ के वनों की शोभा दिखाकर रंगमहल के अन्दर का भी ज्ञान दिया और ब्रह्मानन्द तथा ब्रह्मसृष्टि की वाहेदत और खिलवत का वर्णन किया।

Nijanand App

हांरे ए सुख सैयां लेवहीं, मेरे पिउजी की विरहिन।
पीछे तो जाहेर होएसी, देसी अखंड सुख सबन।। १९ ।।

मेरे धनी की विरहिणी आत्माएं यह सब सुख लेती हैं। फिर पीछे तो सब में जाहिर होकर सबको अखण्ड बहिश्तों का सुख देंगे।

ए रे धनी मेरे चलते, ना टूटी रगां क्यों रही खाल रे।
रूप रंग रस लेयके, क्यों ना पड़ी आग झाल रे।। २० ।।

मेरे धनी के चलते समय मेरी नसें टूट क्यों नहीं गईं? चमड़ी, रूप, रंग और रस लेकर साबुत कैसे खड़ी रहीं? क्यों नहीं आग में झांप खा गईं।

हड्डी मांस रगां भेली क्यों रही, ए पकड़ के अंग अंधेर रे।
धनी का बिछोहा क्यों सह्या, लोहू ना सूक्या तिन बेर रे।। २१ ।।

हड्डी, मांस, नसें इकट्ठे कैसे रहे और इस झूठे अंग को कैसे पकड़े रहे? धनी का विछोहा कैसे सहन कर लिया? उस समय खून सूख क्यों नहीं गया?

अंग मेरे आकार के, सातों धात ना गई क्यों सूक रे।
एहेरन घन के बीच में, क्यों ना हुई भूक भूक रे।। २२ ।।

मेरे शरीर की सातों धातुएं क्यों नहीं सूख गईं? एहेरन (निहाई) पर घन की चोट में बुरादा क्यों नहीं बन गईं?

नैंन नासिका मुख श्रवना, भूंडी खोपड़ी पकड़ तूं क्यों रही रे।
तोड़ इनों को जुदे जुदे, तूं क्यों उजड़ ना गई रे।। २३ ।।

हे पापी खोपड़ी ! ऐसे समय में तू आंखें, नाक, मुख और कान को पकड़कर कैसे खड़ी रही? इन्हें अलग-अलग तोड़कर तू नष्ट क्यों नहीं हुई?

ए रे पिउजी सिधावते, क्यों ना लग्या कलेजे घाय।
काल मेरा कहां चल गया, क्यों न काढी खैंच अरवाय।। २४ ।।

धनी के धाम चलते समय कलेजे में चोट क्यों नहीं लगी? हे काल ! तू कहां चला गया था? तूने जीव को खींचकर बाहर क्यों नहीं निकाल दिया?

नेहेचल निध रे बिछुड़ते, कहां गई वह बुध।
धिक धिक रे चंडालनी, तें क्यों भई ऐसी असुध।। २५ ।।

अखण्ड धनी के बिछुड़ते समय, हे बुद्धि ! तू कहां गई थी? हे चाण्डाल ! तुझे भी धिक्कार है। तू ऐसी बेसुध क्यों हो गई?

ग्यान मेरा तिन समें, क्यों ना किया वतन उजास।
तिन समें दगा दिया मुझको, मैं रही तेरे विस्वास।। २६ ।।

हे मेरे ज्ञान ! तूने उस समय परमधाम के सम्बन्ध का ज्ञान क्यों नहीं दिया? तूने उस समय मुझे धोखा दिया। मैं तेरे विश्वास में रही।

Nijanand App

गुन अंग इंद्री मेरे मुझसों, उलटे क्यों हुए दुस्मन रे।
जिन समें हुआ रे बिछोहा, मेरे क्यों न हुए सजन रे।। २७ ।।

हे मेरे गुण, अंग, इन्द्री ! तुम उलटे मेरे ही दुश्मन क्यों बन गए? जिस समय धनी का वियोग हुआ था, तुम्हें मेरा साथ देना था।

साहेब मेरा चलते, मेरी सकल सैन्या अंग मांहें।
सो काम न आए आतम के, अवसर ऐसो न क्यांहें।। २८ ।।

मेरे साहब (स्वामी) के धाम चलते समय मेरे शरीर की सभी शक्तियां शरीर में ही थीं। वह आत्मा के काम नहीं आईं। अब ऐसा मौका मिलने वाला नहीं है।

फिट फिट रे सैन्या तुमको, क्या न हुती तुमे पेहेचान रे।
जाते जीव का जीवन, तुम क्यों ले न निकसे प्रान रे।। २९ ।।

हे मेरे अंग की सेना ! तुमको धिक्कार है। क्या तुम्हें धनी की पहचान नहीं थी? मेरे जीव के जीवन के जाते समय तुम प्राण लेकर क्यों नहीं निकल गए?

जीवन चलते जीवरा, क्यों छोड़्या तें संग रे।
अब कहूं रे तोको करम चंडाल, तूं तो था तिनका अंग रे।। ३० ।।

हे मेरे जीव ! धनी के चलते समय तूने उनका साथ क्यों छोड़ दिया? हे जीव ! तू तो धनी का अंग ही था। अब तेरे को नीच चाण्डाल कहूं?

नीच करम ऐसा चंडाल, तुझ बिना कोई न करे रे।
श्री धनी धाम चले पीछे, इन जिमी में देह कौन धरे रे।। ३१ ।।

हे चाण्डाल जीव ! तेरे बिना ऐसा नीच कर्म कोई नहीं कर सकता। धनी के धाम चलने के बाद इस धरती पर देह लेकर कौन रह सकता है?

कौन विध कहूं मैं तुझको, कुकरमी करम चंडाल रे।
तोहे अंग न उठी अगिन, तो तूं क्यों न झंपाया झाल रे।। ३२ ।।

हे कुकर्मी चाण्डाल जीव ! मैं तुझे क्या कहूं? तेरे अंग को आग क्यों नहीं लग गई? आग की लपटों में तूने अपने को झोंक क्यों नहीं दिया?

झांप न खाई तें भैरव, क्यों कायर हुआ अवसर।
तिल तिल तन न ताछिया, जाते ए सुख सागर।। ३३ ।।

हे जीव ! तूने पहाड़ से गिरकर शरीर क्यों नहीं छोड़ा? तू ऐसे समय कायर (बुजदिल) कैसे बना रह गया? सुख के सागर धाम के धनी के जाते समय तिल-तिल करके शरीर को क्यों नहीं छील दिया?

गुन सागर धनी चलते, क्यों किया ऐसा हाल रे।
बज्रलेपी रे स्वाम द्रोही, जीव क्यों चूक्या चंडाल रे।। ३४ ।।

गुण के सागर, धाम धनी के चलते समय तेरा ऐसा हाल क्यों हो गया? तूने स्वामी द्रोही बनकर बज्रलेप जैसा पाप क्यों किया? हे चाण्डाल जीव ! तूने ऐसी भूल क्यों की?

Nijanand App

दुष्ट अधरमी केता कहूं, हुआ बेमुख देते पीठ रे।
ऐसा समया गमाइया, निपट निठुर जीवरा ढीठ रे।। ३५ ।।

हे दुष्ट अधर्मी जीव ! तुझे कितना कहूं ? धनी के जाते समय तूने उलटा मुख कर लिया। तूने ऐसा समय खो दिया है। तू निश्चय ही बड़ा कठोर और ढीठ है।

सब्दातीत के पार के पार, तिन पार जोत का था तेज रे।
यासों था तेरा सनमंध, पर तें कछुए न राख्या हेज रे।। ३६ ।।

शब्दातीत (बेहद) के पार के भी पार परमधाम के वह स्वरूप थे, जिनसे तेरा सम्बन्ध था। तूने उनसे कुछ भी लगाव नहीं रखा।

तुझमें भी तेज है उन जोत का, और वाही कमल की बास रे।
वह तेज फिरते रे तूं तेज, क्यों न पोहोंच्या जोत प्रकास रे।। ३७ ।।

तेरे अन्दर भी परमधाम की आत्मा है और वहीं का तेरे अन्दर ज्ञान भी है। फिर उस परमधाम के तेज के जाते समय, हे मेरी आत्मा ! तू क्यों नहीं उनके साथ निकली ?

अब कहा करूं कहां जाऊं, ए बानी धनी ढूंढों कित रे।
पिउ पोहोंचाए मैं पीछे रही, करने विलाप रही इत रे।। ३८ ।।

अब मैं क्या करूं और कहां जाऊं ? अब उस वाणी और धनी को कहां ढूंढें ? धनी को पहुंचाकर मैं रोने के लिए ही पीछे रह गई।

अब ए बानी तूं कहां सुनसी, मेरे धाम धनी के वचन रे।
बरनन करते जो श्रीमुख, सो अब काहूं न पाइए ठौर किन रे।। ३९ ।।

मेरे धाम के धनी के वचनों की यह वाणी तू कहां सुनेगी ? धाम-धनी अपने मुखारबिन्द से जो वर्णन करते थे, अब वह ठिकाना और वाणी कहीं नहीं मिलेगी।

अब तारतम कौन केहेसी, कौन विचार कर देसी हेत।
चौदे भवन में इन धनी बिना, ए बानी कोई ना देत।। ४० ।।

अब तारतम कौन कहेगा और बड़े प्यार के साथ उसके भेद कौन समझाएगा ? धनी के बिना इन चौदह लोकों में और कोई इस वाणी को देने वाला नहीं है।

बृजलीला रात दिन अखंड, रासलीला अखंड रात रे।
पिउजी बिना विवेक कौन केहेसी, हुआ प्रतिबिम्ब तीसरा प्रभात रे।। ४१ ।।

बृज लीला रात-दिन अखण्ड है। रास की लीला की रात अखण्ड है। पिया के बिना इस भेद को कौन कहेगा ? इस तीसरे ब्रह्माण्ड में प्रतिबिम्ब की लीला प्रभात की लीला है। यह ब्योरा कर कौन समझाएगा ?

भेख बागे का बेवरा, रह्या अग्यारे दिन रे।
सात गोकुल चार मथुरा, कौन केहेसी विवेक वचन रे।। ४२ ।।

इस प्रतिबिम्ब की लीला में ग्यारह दिन गोलोक के भेष की लीला, जिसमें सात दिन गोकुल और चार दिन मथुरा के थे, इनके भेद की हकीकत कौन बताएगा ?

Nijanand App

उत्तम विचार उत्तम बंधेज, और कई विधके द्रष्टांत रे।
इन धनी बिना ए दया कर, कौन देसी कर खांत रे।। ४३ ।।

ऐसे उत्तम विचार और ऐसे उत्तम ढंग और तरह-तरह के दृष्टांत देकर जो मन के संदेह मिटाकर सन्तुष्ट करने वाले हों, इन धनी बिना कौन दया करके देगा?

पन बांध बरस चौदेलो, सास्त्र को अर्थ कौन लेसी।
सो ए प्रकास इन पिउ बिना, एक साइत में समझाए कौन देसी।। ४४ ।।

चौदह वर्ष तक नेष्ठाबन्ध (प्रण-निष्ठावद्ध) होकर भागवत सुनकर शास्त्रों के भेद लेकर हमें एक पल में उनका सार धनी के बिना कौन समझाएगा?

दूध पानी रे जुदा कर, कौन केहेसी कर रोसन रे।
मोहजल गेहेरे में डूबते, कौन काढे या धनी बिन रे।। ४५ ।।

दूध, पानी, (ब्रह्म और माया) को जुदा करने का ज्ञान धनी बिना कौन देगा? इस भवसागर में डूबते हुए सुन्दरसाथ को धनी बिना कौन निकालेगा?

अठोतर सौ पखका, कौन काढ देसी सार रे।
सुख अछर अछरातीत के, कौन देसी बिना आधार रे।। ४६ ।।

एक सौ आठ पक्ष की हकीकत कौन बताएगा? अक्षर और अक्षरातीत के सुख धनी के बिना कौन देगा?

नरसैयां कबीर जाटीय के, और कई साधों सास्त्र वचन रे।
काढ दे सार कौन इनका, करके एह मथन रे।। ४७ ।।

नरसैयां, कबीर, जाटी, कई साधुओं और शास्त्रों के वचनों का मन्थन कर इसका सार निकालकर हमें कौन देगा?

महाप्रले लों जो कोई, सास्त्र पढ करे अभ्यास।
बहु विध लेवे विवेकसों, कर मन द्रढ विस्वास।। ४८ ।।

महाप्रलय तक भी यदि कोई शास्त्र पढ़कर अभ्यास करे और मन में दृढ़ विश्वास कर तरह-तरह के विचार से ग्रहण करे, तो भी उसे वह ज्ञान नहीं मिलता।

तो भी न आवे ए विवेक, ना कछू ए मुख बान रे।
सो संग धनी के एक खिन में, कर देवें सब पेहेचान रे।। ४९ ।।

इतना अध्ययन करने के बाद में भी वह शहूर नहीं आ सका, जो धनी के मुखारबिन्द की वाणी से एक पल में सब पहचान हो जाती है।

अब अबूझ टाल सुबुध देय के, कौन करसी चतुर वचिखिन रे।
नेहेचल निध धनी धाम की, सो कहूं पाइए न चौदे भवन रे।। ५० ।।

अब अज्ञानता हटाकर जागृत बुद्धि देकर कौन हमें चतुर और प्रवीण बनाएगा परमधाम का अखण्ड ज्ञान चौदह लोकों में कहीं नहीं मिलता।

Nijanand App

दूजा कौन देसी रे लड़ के, ऐसी जाग्रत बुध सुजान रे।
साथ धाम का जान के, कौन केहेसी हेत चित आन रे।।५१ ।।

ऐसी जागृत बुद्धि का ज्ञान प्यार से लड़कर दूसरा हमें कौन देगा? धाम का साथी जानकर कौन प्यार भरी वाणी से हमको ज्ञान देगा?

नींद उड़ाए जगाए के, कौन देसी घर आप पेहेचान रे।
खेल देखाए आप देह धर, कौन काढ़सी होए गलतान रे।।५२ ।।

अज्ञान की नींद उड़ाकर जागृत बुद्धि से जगाकर अपने घर की तथा धनी की पहचान कौन कराएगा? तन धारण कर सुन्दरसाथ को कौन खेल दिखाएगा? अधिक मेहनत से थकने के बाद भी सुन्दरसाथ को माया से कौन निकालेगा?

त्रैलोकी त्रिगुन माया मिने, हम बैठे थे रचके घर रे।
सो नेहेचल धाम में बैठाए के, याको कौन देखावे खेल कर रे।।५३ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश की माया के बीच में हम अपना घर बनाकर बैठ गए थे। धनी ने अखण्ड घर की पहचान कराई और इस खेल को झूठ करके दिखाया, ऐसा कौन करेगा?

अब ए चरचा कहां सुनसी, मूल वचन तारतम रे।
ए सुने बिना हम क्यों गलसी, बिना बानी इन खसम रे।।५४ ।।

अब तारतम के मूल वचनों की चर्चा हम कहां सुनेंगे और धनी की वाणी सुने बिना हमारी आतम में चोट कैसे लगेगी?

और घाट बिना गले, क्यों जीव टल होसी आतम रे।
तीन दिवाल आड़ी भई, सो उड़े ना बिना खसम रे।।५५ ।।

धनी की वाणी के बिना जीव का आवागमन हटाकर योगमाया में अखण्ड तन कौन देगा? जीव के इस रास्ते में तीन दीवारें (स्थूल, सूक्ष्म और कारण) खड़ी हैं, इन्हें धनी के बिना कौन हटाएगा?

पांच पचीस जो उलटे, होए बैठे दुस्मन रे।
सो नेहेचल घर में बैठाए के, कौन कर देवे सीधे सजन रे।।५६ ।।

पांच तत्व और पच्चीस प्रकृतियां (पांच कर्मेन्द्रिय, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच तन्मात्रा, पांच प्राण, चार अन्तःकरण और एक जीव। कर्मेन्द्रियां—हाथ, पैर, मुख, लिंग, गुदा। ज्ञानेन्द्रियां—आंख, कान, नाक, जिह्वा और चमड़ी। पांच तन्मात्रा—स्पर्श, शब्द, रूप, रस, गंध। पांच प्राण—प्राण, अपान, समान, ज्ञान, उदान। चार अन्तःकरण—मन, चित्त बुद्धि, अहंकार) यह माया की तरफ उलटे चल रहे थे और हमारे दुश्मन बने बैठे थे। इनको सज्जन बनाकर हमें परमधाम में धनी के बिना कौन बिठाएगा?

वैरी मार के कौन जिवावसी, उलटे भान के करे सनमुख रे।
या दुख में इन धनी बिना, कौन देवे सांचे सुख रे।।५७ ।।

हमारे इन गुण अंग इन्द्रियों को मारकर हमें कौन जिन्दा करेगा? इनको उलटे रास्ते से निकालकर धनी के सम्मुख कौन करेगा? इस दुःख के संसार में धनी के बिना सच्चे सुख कौन देगा?

Nijanand App

बीच पट आतम परआतमा, कौन उड़ाए कर दे संग रे।
इन दुलहे बिना दुलहिंनसों, क्यों होसी रस रंग रे।।५८।।

आत्मा और परआतम के बीच में फरामोशी का जो परदा पड़ा है, इसे कौन हटाकर आत्मा को परआतम में मिलाएगा? इन धनी के बिना धनी का रस रंग सुन्दरसाथ को कौन कराएगा?

मोहजल पूर अंधेर में, जित काहू न किसी की गम रे।
तहां से काढ़ देवे सुख नेहेचल, ऐसा कौन बिना इन खसम रे।।५९।।

भवसागर के अन्धेरे में जहां किसी को किसी की पहचान नहीं है, यहां से निकाल कर अखण्ड सुख इन धनी के बिना कौन देगा?

इन भवसागर के जीवों में, वासना ढूंढ काढे छुड़ाए के फंद रे।
आतम अपनी पेहेचान के, कौन पावे आनंद रे।।६०।।

इन भवसागर के जीवों में से आत्माओं को ढूंढ़कर माया के फंदे से कौन छुड़ाएगा? अपनी आत्माओं की पहचान करके अब खुशी किसको होगी?

अब कौन रे करसी ऐसा वरनन, नेहेचल बृज रास धाम रे।
ए कौन सुख सैयों को देय के, कौन मिलावे स्यामा जी स्याम रे।।६१।।

अब अखण्ड बृज रास और परमधाम का ऐसा वर्णन कौन करेगा? सुन्दरसाथ को सुख देकर राजजी और श्यामाजी से कौन मिलाएगा?

आतम को रे जगाए के, कौन खोले आतम के श्रवन रे।
अंतर पट उड़ाए के, कौन केहेसी मूल वचन रे।।६२।।

सोई हुई आत्मा को ज्ञान सुनाकर कौन जगाएगा? फरामोशी का परदा उड़ाकर परमधाम के मूल वचनों की खबर कौन देगा?

फोड़ ब्रह्मांड आड़े आवरण, ताए पोहोंचावे अछर पार रे।
सुख अखंड अछरातीत के, कौन देवे बिना इन भरतार रे।।६३।।

क्षर ब्रह्माण्ड के आड़े परदे को हटाकर अक्षर के पार कौन पहुंचाएगा? इन धनी के बिना अखण्ड अक्षरातीत श्री राजजी के सुख कौन देगा?

ऊपर बाड़े वाट धाम की, कौन बतावे और रे।
इन भेदी बिना भोम क्यों छूटही, क्यों पोहोंचिए अखंड ठौर रे।।६४।।

इन भेद के जानने वाले धनी के बिना यह भवसागर कौन छुड़ाएगा? अखण्ड परमधाम कैसे पहुंचेंगे? वहां पहुंचने का रास्ता कौन बताएगा?

साथ अजान अबूझ को, कौन लेसी सुधार रे।
वासना सगाई पेहेचान के, कौन खोल दे नेहेचल द्वार रे।।६५।।

सुन्दरसाथ जो अनजान हैं, अज्ञानी हैं, उन्हें कौन समझाकर सुधारेगा? आत्माओं की पहचान करके उनको परमधाम का रास्ता कौन बताएगा?

Nijanand App

सत सागर सुतेज में, बतावत नेहेचल धन रे।
सो पूर लेहेरां चल गई, आवत अमोल अखंड रतन रे।।६६।।

धनी अखण्ड परमधाम के सच्चे सुखों का आवेश में वर्णन करते थे। अखण्ड ज्ञान की लहरों पर लहरें आती थीं, जिनसे अखण्ड ज्ञान आता था, जो अब चला गया।

ए धन मेरे धनीय का, आया था मुझ कारन रे।
सो धन खोया में नींद में, धनी देते कर कर जतन रे।।६७।।

यह धन मेरे धनी का था और मेरे ही वास्ते आया था। धनी कई यत्न करके मुझे देते थे, वह निधि मैंने नींद में खो दी।

ए धन जाते मेरे धनी का, सो तूं देख के कैसे रही रे।
फिट फिट भूंडी पापनी, तें एती पुकार क्यों सही रे।।६८।।

ऐसा धन (मेरे धनी का) जाता देखकर, दुष्ट पापी आत्मा! तू कैसे देखती रही? तुझे धिक्कार है! धनी इतनी पुकार करते रहे, तूने सहन कैसे की?

फिट फिट रे मेरी आतमा, तें क्यों खोई निध आई हाथ रे।
कर दई धनी धाम पेहेचान, तो तूं क्यों न चली पिउ साथ रे।।६९।।

धिक्कार है मेरी आत्मा ! तूने हाथ में आई वस्तु खो दी। तुझे धनी और धाम की पहचान होने पर भी तू उनके साथ क्यों नहीं चली गयी?

संग पिउ के न चली, क्यों रही पिउसों बिछुर रे।
अजहूं आह तेरी न उड़ी, याद कर अवसर रे।।७०।।

हे आत्मा ! तू पिया से क्यों बिछुड़ गई? उनके साथ क्यों नहीं चली गयी? ऐसा अवसर याद कर तेरी सांस निकल क्यों नहीं गयी?

त्राहि त्राहि करूं रे सजनी, पिउजी दियो मोहे छेह रे।
जल बल विरहा आग में, भसम न हुई जीव देह रे।।७१।।

हे सजनी ! मैं हाय-हाय करती हूं। प्रीतम मुझे छोड़कर चले गए हैं। उनके विरह की आग में मेरा शरीर और जीव भस्म क्यों नहीं हो गया?

कई बिध कह्या मोहे पिउजी, पर मैं कछू न कियो सनेह रे।
अब तो बैठी धन खोए के, हाथ आया था जेह रे।।७२।।

मेरे धनी ने मुझे कई प्रकार से समझाया, परन्तु मैंने कुछ भी स्नेह नहीं किया। अब तो हाथ आए धनी को खो बैठी हूं।

धनिऐं तो केहे केहे देखाइया, कर कर मुझसों एकांत रे।
पर मैं चूकी चंडालन अवसर, अब पकड़ बैठी मैं स्वांत रे।।७३।।

धनी ने मुझे तो एकान्त में भी बैठकर ज्ञान दिया, पर मैं ही चाण्डालिनी निकली कि हाथ आया अवसर गंवाकर अब चुपचाप होकर बैठी हूं?

Nijanand App

अब सब्दातीत निध धाम की, ए कौन केहेसी मुख बान रे।
श्री धामके सुख की रे बीतक, कौन केहेसी वर्तमान रे।।७४ ।।

अब बेहद के परे परमधाम के अखण्ड ज्ञान का कौन मुख से वर्णन करेगा? परमधाम की सुख की लीला का अब कौन वर्णन करेगा?

उठते बैठते खेलन की, सुध कौन कहे एह सुकन रे।
बन जाए अन्हाए के, कौन केहेसी सिनगार बरनन रे।।७५ ।।

उठते-बैठते खेलने की परमधाम की लीला के वचन कौन हमको कहेगा? वनों में जाकर झीलने के बाद सिनगार का वर्णन कौन सुनाएगा?

वस्तर भूखन की विगत, पिउ बिना कौन लेवे रे।
ए सुख अनुभव अपना, सनमंध करके कौन देवे रे।।७६ ।।

वस्त्र और आभूषणों की हकीकत का वर्णन धनी के बिना कौन जानता है, जो बताएगा? अपने अनुभव के सुखों का ज्ञान साथी जानकर कौन देगा?

कई सुख अनुभव बन के, कई सुख सातों त्रट रे।
सुख ताल मन्दिर मोहोलन के, कौन देवे उड़ाए अंतर पट रे।।७७ ।।

वनों के कई सुख, सातों घाटों में कई सुख, हौज कौसर तालाब के कई सुख, टापू महल के सुखों को माया का परदा हटाकर कौन देगा?

तीसरी भोम मोहोल सिनगार, और बैठ के आरोग पौढ़न रे।
सुखपाल बैठ बन सिधावते, कौन केहेसी पीछला पोहोर दिन रे।।७८ ।।

तीसरी भोम के महल में सिनगार का और पड़साल पर बैठकर आरोगने (खाने) और नीले-पीले मन्दिर में पौढ़ने का तथा सुखपाल में बैठकर वनों में जाने का और दिन के पिछले प्रहर की लीला का वर्णन कौन करेगा?

सुख चौथी भोम निरत के, सुख पांचमी भोम पौढ़न रे।
ए सुख अनुभव कौन केहेसी, कई विध विलास रैन रे।।७९ ।।

चौथी भोम में नृत्य के सुख का तथा पांचवीं भोम में पौढ़ने के सुख का और श्री राजजी महाराज के साथ रात्रि को विलास के सुख का अनुभव कौन कहेगा?

कई विध सुख तारतम के, जो कहे वचन सुख मूल रे।
या विध हमें कौन कहे बरनन, सनमंध होए सनकूल रे।।८० ।।

तारतम के द्वारा इश्क रब्द के मूल वचनों का वर्णन प्रसन्न होकर कौन बताएगा?

देत बिछोहा धनीधाम के, तुम क्यों न किया एह विचार रे।
हुती आसा मुखी इंद्रावती, सुख चाहती अखंड अपार रे।।८१ ।।

धाम-धनी के बिछुड़ते समय श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरी चाहना बाकी थी। अखण्ड सुखों को बेशुमार लेना चाहती थी। इसका विचार क्यों नहीं किया?

Nijanand App